स्पेशल बच्चों द्वारा
वतन से स्पेशल सेवा करने का पार्ट

(०७ मई २००८, भ्राता जगदीश जी ने अपना पुराना चोला छोड़ बापदादा की गोद ली, वतन से प्राप्त दिव्य सन्देश तथा दादी गुलजार जी का अनुभव)

ड्रामा में भिन्न-भिन्न दृश्य हम सबके सामने आते हैं और यही शिक्षा देते हैं कि जो भी दृश्य देखते हैं वह साक्षी हो करके देखें और जो सहयोग हम दे सकते हैं वह दें। तो हम सबने आत्मा को स्नेह का, शक्ति का सहयोग दिया और आत्मा बहुत सहज बाबा के पास चली गई। एक सेकण्ड की बात थी। मैं सामने ही थी, तो मैंने नहीं समझा कि यह जा रहा है, लेकिन मैं समझती हूँ मुख से सहज ही सांस निकला। आँखें आधी खुली हुई थी और बिल्कुल सेकण्ड में बॉडी शान्त हो गई अर्थात् आत्मा बाबा के पास चली गई।

तो आज अमृतवेले हम बाबा के पास गये, वहाँ तो बाबा की गोदी में जगदीश भाई आकारी रूप में लेटे हुए थे। और बाबा अपने हस्तों से उनके माथे पर हाथ फेर रहे थे और जगदीश भाई भी बहुत मीठी दृष्टि बाबा से ले रहे थे। तो बाबा ने कहा देखो, बच्चा चाहता था कि मैं अभी इस शरीर से तो सेवा कर नहीं सकूंगा तो बाबा ही मुझे बुला लेवे और जो सेवा मेरे से लेनी हो, वह लेवे। तो इसको ३-४ दिन पहले से ही यह संकल्प आ रहा था कि मुझे जाना

है, जाना है। तो जब आत्मा को संकल्प आ जाता है कि जाना है, तो वह जल्दी जाता है। तो हमने देखा कि उसे संकल्प था कि मुझे हॉस्पिटल में नहीं जाना है। शुरू से ही यह कहते थे। ड्रामानुसार मधुबन की हॉस्पिटल का पार्ट था, परन्तु ३ दिन पहले बहुत अन्दर से था कि मुझे पाण्डव भवन ले चलो। तो जो इनके दोनों संकल्प थे कि हॉस्पिटल में नहीं जाना है और अभी जाना है। तो यह दोनों संकल्प बाबा ने पूरे किये और सहज बाबा के पास चले गये।

तो बाबा ने दृष्टि देते हुए पूछा बच्चे, अभी बाबा के पास पहुँच गये हो। तो मैं भी सामने गई थी। तो बाबा ने कहा बच्चे को यही आश थी कि मैं मधुबन से ही जाऊं, तो ड्रामानुसार देखो इनकी यह भी आशा पूरी हो गई, जो मधुबन से ही इस आत्मा को बाबा के पास आना था और मधुबन से ही विदाई लेनी थी। और विशेष तो हमारी दादी जी निमित्त थी तो उनसे ही जैसे छुट्टी के लिए रुके थे। तो लास्ट में दादी मिली, उसको बाहर से स्मृति नहीं थी लेकिन अन्दर आत्मा को तो स्मृति होती ही है। तो बाबा ने कहा इनके सब संकल्प पूरे हो गये। फिर बाबा ने कहा कि बच्चे को एक संकल्प और था कि मैं बाबा को प्रत्यक्ष नहीं कर सका, उसके लिए हमें और कुछ करना चाहिए जो बाबा प्रत्यक्ष हो जाए। तो इनका यह जो संकल्प है, अभी बाबा इसकी दूसरी सर्विस से पूरा करेगा। एक संकल्प इसका रह गया कि मैं बाबा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनूं। तो बाबा ने कहा कि यह भी बच्चे की जो आश है, बाप को प्रत्यक्ष करने की उसके लिए किसी भी रूप में बाबा इनको निमित्त बनायेगा। यह भी बच्चे की आश पूरी हो जायेगी।

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्ची आप तो जानती हो कि यह हमारा स्पेशल बच्चा है। मैंने कहा बाबा स्पेशल तो बहुत हैं, तो बाबा ने कहा स्पेशल इस बात में है कि यह पहला ही बच्चा है जो बेगरी लाइफ में सरेन्डर हुआ है। तो हमें भी याद आया, कि जब यह समर्पण हुआ तब कमलानगर में सिर्फ दो छोटे कमरे थे। जहाँ कोर्स किया वह एक छोटा-सा स्थान दूसरा था, फिर मकान लेने में बहुत सहयोग दिया। लेकिन जब पहला कमला नगर का

सेन्टर लिया तो उसमें केवल दो ही कमरे थे, हाल भी नहीं था। एक में बहनें रहती थी और एक में जगदीश भाई रहते थे। वहाँ ही सारा कारोबार चलता था। और शुरू से इनका बहनों से बहुत प्यार था। हमें याद है उन दिनों गर्मी बहुत थी, तो कमला नगर से ४-५ किलोमीटर दूर बर्फखाना था, तो यह वहाँ जाकर सेवा करके वहाँ से अपने कंधे पर बर्फ की जो बड़ी ईंट (सिल्ली) होती है वह ले आता था। और सभी बहनों को ठण्डा पानी अथवा शरबत आदि पिलाने की सेवा करता था। और बाबा के डायरेक्शन से पहले-पहले कुम्भ मेले के लिए लिटरेचर तैयार किया था। पहला वह बुक लिखा था। तो सेवा के निमित्त शुरू से ही बने, इसलिए बाबा ने कहा कि यह स्पेशल आत्मा है इसीलिए मैं इस बच्चे से वतन में भी स्पेशल सेवा कराऊंगा। रोज़ अमृतवेले अपने साथ वर्ल्ड के ग्लोब पर खड़ा करके इसको भी सकाश देने की, लाइट हाउस बनकर आत्माओं को लाइट देने की स्पेशल सेवा इनसे वतन से कराऊंगा, और इनकी जो दिल है बाप को प्रत्यक्ष करने की, वह भी बाबा इनकी आशा किसी भी रूप से ज़रूर पूरी करायेगा।

फिर बाबा ने जगदीश भाई को कहा बच्चे अभी वतन तुम्हारा घर है, तुम खाओ, खेलो, आराम करो, जो मन में आये वह करो। ऐसे कहते बाबा ने मेरे को कहा कि आप जगदीश जी से मिलेंगी। बाबा ने कहा आप बात करो - मैंने कहा जगदीश जी, आप बाबा के पास आ गये! तो कहा आना ही था। बाकी मुझे यह बहुत खुशी है कि मधुबन निवासियों ने और आप सबने मुझे बहुत सहयोग दिया, जो मेरी सेवा की उससे मैं बहुत-बहुत खुश हूँ। तो सभी मधुबन निवासियों को और जो भी आवें सबको मेरी बहुत-बहुत याद देना। ऐसे कहते मिलन मनाते मैं साकार वतन में आ गई।